श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल का मामला एसडीएम को सौंपा, बनेगी कमेटी

ग्रीवेन्स कमेटी की बैठक में उछला मुद्दा, डिप्टी सीएम ने लिया निर्णय

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद: श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल का मामला जिला परिवेदना एवं कष्ट निवारण समिति में 28 जून को उठ गया। उप मुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में मामले का हल तो नहीं निकला लेकिन भाजपा विधायक सीमा त्रिखा ने अपने गुट का पलड़ा भारी करने में कोई कसर नहीं छोड़ी लेकिन दुष्यंत ने निष्पक्ष दिखने की पूरी कोशिश की।

एसडीएम को सौंपी गई जिम्मेदारी

श्रीराम धर्मार्थ सोसाइटी और अस्पताल में धांधली की शिकायत सोसाइटी के उपप्रधान विशाल भाटिया ने की थी। उसी शिकायत के आधार पर विशाल भाटिया और दूसरे पक्ष के निलंबित प्रधान कंवल खत्री को बुलाया गया था। बैठक में विशाल भाटिया ने समिति के सदस्यों को कंवल खत्री गुट किस तरह कोविड की आड़ लेकर अस्पताल में घुसा। किस तरह सोसाइटी के पैसे को बर्बाद किया जा रहा है। अस्पताल की चाबी धर्मगुरु के पास होने के बावजूद डुप्लीकेट चाबियों से कैश बॉक्स, लॉकर्स आदि के ताले खोले गए। बैंक में रखे एफडी के पैसे को लुटाया गया, जिसके पीछे बहुत बड़ा भ्रष्टाचार हुआ है। चूंकि फरीदाबाद में कोरोना खत्म हो चुका है तो अस्पताल को फिर से सील करने और इसे नगर निगम के कब्जे में दिया जाए। क्योंकि नगर निगम ने इसे अपनी संपत्ति मानते हुए सील लगाई थी।

उप मुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला ने घोषणा की वो इस मामले को एसडीएम बडखल को सौंप रहे हैं। जो दोनों पक्षों से तमाम आरोपों के सबूत लेंगे। एसडीएम दोनों पक्षों को मिलाकर एक कमेटी बनाएंगे जो अस्पताल का संचालन करेगी। यह कमेटी तब तक काम करती रहेगी जब तक स्टेट रजिस्ट्रार सोसाइटीज से इस संबंध में कोई फैसला नहीं आ जाता।

विधायक ने बुना जाल

ग्रीवेन्स कमेटी की बैठक में जब यह मामला उठाया जा रहा था तो उस दौरान कंवल खत्री गुट आरोपों पर बराबर टोकाटाकी करता रहा। वह आरोपों को गलत बताता रहा लेकिन उनके पास सबूत के लिए कोई दस्तावेज नहीं थे। तथ्य भी वे लोग झुठला नहीं पा रहे थे। लेकिन विधायक सीमा त्रिखा ने ऐसा जाल बुना हुआ था कि कांग्रेस विधायक नीरज शर्मा समेत भाजपा के सारे विधायक कंवल खत्री गुट के समर्थन में नजर आए। सीमा ने दुष्यंत के कान में भी कुछ कहा। इस पर दुष्यंत ने भाजपा नेता और श्रीराम अस्पताल मामले में विशाल भाटिया गुट का साथ दे रहे आनंदकांत भाटिया को हर बार बोलने से रोक दिया। आनंद भाटिया दरअसल कंवल खत्री गुट की टोकाटाकी का विरोध करने को खड़े हुए लेकिन दुष्यंत ने कहा कि आप नहीं बोलेंगे। श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल के संस्थापक सदस्य एस.एम. हाशमी ने कहा कि हालांकि हम डिप्टी सीएम के फैसले से बहुत खुश नहीं है। दुष्यंत चौटाला से उम्मीद थी कि वो अपने दादा चौधरी देवीलाल की तरह अस्पताल के मामले में इंसाफ करते लेकिन एसडीएम के हवाले मामला करके एक तरह से उन्होंने मामले को लटका दिया है। होना तो यह चाहिए था कि ग्रीवेन्स कमेटी की बैठक में दुष्यंत चौटाला इस मसले का हल पेश करते और हमें भ्रष्टाचारी लोगों से छुटकारा दिलाते।

बैठक के बाद मिली सूचना

भाजपा विधायक सीमा त्रिखा ने जाल इस ढंग से बुना था कि शिकायतकर्ता विशाल भाटिया के पास न तो ग्रीवेन्स कमेटी के बैठक की सूचना समय पर पहुंचे और न एजेंडा समय पर पहुंचे। ग्रीवेन्स कमेटी की बैठक जब खत्म हो गई और विशाल भाटिया अपने घर पहुंचे तो उनकी पत्नी ने बताया कि किसी सरकारी बैठक का लेटर आया हुआ है। जब उन्होंने वह पत्र देखा तो उसमें 28 जून को हो चुकी ग्रीवेन्स कमेटी की बैठक की सूचना थी, जिसमें उनसे समय पर मौजूद रहने को कहा गया था। इस पत्र के साथ ग्रीवेन्स कमेटी के बैठक का एजेंडा भी उन्हें भेजा जाना चाहिए था लेकिन पत्र के साथ एजेंडा नहीं था। विशाल भाटिया को मीडिया के जरिए ग्रीवेन्स कमेटी के बैठक की सूचना और एजेंडा की जानकारी पहले ही मिल चुकी थी, इसलिए वो समय पर बैठक में पहुंच गए थे।

नहीं लौटा प्रशासक

करीब दो हफ्ते से ज्यादा हो चुके हैं लेकिन श्रीराम धर्मार्थ चैरिटेबल सोसाइटी के लिए नियुक्त किए गए प्रशासक का कोई अता-पता नहीं है। प्रशासक का कार्यकाल 8 जून को खत्म हो चुका है। लेकिन न तो उसका कार्यकाल बढ़ाने की सूचना सोसाइटी को मिली है और न ही उसने सोसाइटी को कोई जानकारी दी है। डीआईसी और जिला फरीदाबाद रजिस्ट्रार सोसाइटीज में ज्वाइंट डायरेक्टर का पद खाली पड़ा है, इसलिए सोसाइटीज के संबंध में सारे फैसले रुके पड़े हैं। खुद डीआईसी दफ्तर को नहीं मालूम कि श्रीराम धर्मार्थ सोसाइटी में इस समय प्रशासक कौन है। क्योंकि डीआईसी दफ्तर में भी इस संबंध में कोई सूचना नहीं पहुंची है।

मैक्सिकन माफिया के शिकंजे में ग्रेटर फ़रीदाबाद

नवीन चितकारा

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

फ़रीदाबाद : ग्रेटर फ़रीदाबाद में रहने वाले सावधान हो जाएँ। ग्रेटर फ़रीदाबाद में बहुत तेज़ी से "मैक्सिकन माफिया" उंभर रहा है। यह मैक्सिकन माफिया नहरपार की तमाम संस्थाओं पर कब्जा करने से लेकर हर तरह के अपराध में शामिल है। यह माफिया ग्रुप सिर्फ़ किसी संगठन, सोसाइटियों की आरडब्ल्यूए को ही नहीं बल्कि आपके जीवन को तबाह करने वाला है।

बहुराष्ट्रीय कंपनियों में काम करने वाले कुछ इंजीनियर, जो विदेश में भी रह चुके हैं और अब ग्रेटर फरीदाबाद की सोसाइटियों में बस गए हैं, उन्होंने पैसे कमाने के नए और आसान तरीकों को ईजाद किया है।

कौन है यह शख्स

बहुराष्ट्रीय कंपनी एरिक्सन और टेक महिंद्रा का कर्मचारी नवीन चितकारा, मैक्सिकन माफिया यानि माफिया मेक्सिकाना का उभरता हुआ नया चेहरा और मॉडल है। यह शख्स सीवेज टैंकर माफिया, ताजे पानी की आपूर्ति का टैंकर माफिया, मनी-रैकेट, सूदखोरी का धंधा चलाकर नहरपार की हर सोसाइटी के लोगों पर अपनी सेवाएँ लेने का दबाव डालता है। अगर कोई सोसाइटी और उसके सदस्य इसकी कोई सेवा नहीं लेते तो उन्हें परेशान किया जाता है। जिन सोसाइटी की आरडब्ल्यूए पर इसका क़ब्ज़ा है, वहाँ वो अपनी सेवाएँ जबरन सोसाइटी के लोगों को बेचता है। विरोध करने वालों को दबा दिया जाता है। इस शख्स ने नहरपार की सरकारी ज़मीनों पर अतिक्रमण में भू-माफिया के साथ संबंध बनाने की कला में भी महारत हासिल कर ली है।

नवीन ने सफलतापूर्वक अपनी व्हाइट कलर जॉब की भूमिका को ब्लैक-कॉलर जॉब में परिवर्तित कर लिया है और दोनों को साथ साथ चला रहा है । कुछ समय पहले नवीन चितकारा जब आरडब्ल्यूए का कोषाध्यक्ष था तो उस समय सरकार के पैनलबद्ध चार्टर्ड एकाउंटेंट ने उसके द्वारा किये गये धन के दुरुपयोग की रिपोर्ट प्रस्तुत की थी।

कैसे करता है परेशान

कुछ सदस्यों ने नवीन चितकारा से आरडब्ल्यूए धन के दुरुपयोग पर सवाल पूछे और न्याय पाने के लिए आपराधिक मामला दर्ज कराया, तो आरोपी नवीन चितकारा माफिया का असली चेहरा सामने आ गया। उसने शिकायतकर्ताओं पर आपराधिक मामलों को दबाने और वापस लेने के लिए मनोवैज्ञानिक और सामाजिक दबाव बनाने के लिए एक व्यवस्थित प्रक्रिया शुरू की।

नवीन चितकारा ने शिकायतकर्ताओं पर बार-बार झूठी पुलिस शिकायत दर्ज करके परेशान किया। माफिया सदस्यों के अपने ग्रुप के माध्यम से, अपने परिवार की महिला सदस्यों के माध्यम से बार-बार झूठी पुलिस शिकायते दर्ज करायीं। शिकायतकर्ताओं का घेराव किया, शिकायतकर्ताओं की महिला सदस्यों को छेड़ा, सोशल मीडिया पर शिकायतकर्ताओं को ट्रोल किया। मामलों को निपटाने के लिए राजनीतिक दबाव डलवाया। अदालत से अपने विरुद्ध दर्ज मामलों के कागजात चुराए और गवाहों और निवासियों को डराने के लिए दर्ज मामलों में गवाहों की सूची के कागजात सोशल मीडिया पर प्रकाशित किए। शिकायतकर्ताओं और गवाहों को सार्वजनिक रूप से पिटवाया, पीएम केयर फंड के नाम पर पैसे वसूल कर खा गया। राजनीतिक संरक्षण के माध्यम से चुनावों में धांधली के प्रयत्न किये। नोएडा से अज्ञात बंदूकधारियों को आरडब्ल्यूए में लाया और सबूतों को खत्म करने के लिए आरडब्ल्यूए के सभी सीसीटीवी कैमरों को बंद कर दिया। खुद चुपचाप और गुप्त रूप से वीडियो रिकॉर्ड करता है और जोड़-तोड़ करता है। उसे बेनकाब करने वाले लोगों को पीटने के लिए सभी को सोशल मीडिया पर उतेजित करता है।

नवीन चितकारा, कभी टेक महिंद्रा और कभी एरिक्सन कंपनी में काम करने का दावा करता है और वह अपने भरोसेमंद दोस्तों के साथ अपनी रातों को रंगीन बनाने के लिए प्रसिद्ध है और विदेशी शराब का शौकीन है। उसके कुछ दोस्तों की आपराधिक पृष्ठभूमि है जो जमानत पर बाहर हैं और उनके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज है। नवीन चितकारा सीएम सिटी करनाल का रहने का भ्रम पाले हुए है।

ग्रेटर फ़रीदाबाद में सभी आरडब्ल्यूए के निवासियों, कंपनियों, विदेशी दूतावासों और सरकारी विभागों को इन उभरते माफिया और कार्टेल से खुद को बचाने की जरूरत है।

मैक्सिकन माफिया कार्टेल अब धन बल की मदद से आरडब्ल्यूए चुनाव लड़ रहा है। आरडब्ल्यूए के धन को नियंत्रित करता है और उसी धन से आपराधिक पृष्ठभूमि वाले व भ्रष्ट लोगों से गठजोड़ करता है। निवासियों को डराने के लिए बाहुबलियों का इस्तेमाल करता है। राजनीतिक और प्रशासनिक संरक्षण का इंतज़ाम रिश्वत, शराब और अन्य प्रलोभन के साधनों से करता है। आरडब्ल्यूए की डिजिटल संपत्ति, कंप्यूटर ज्ञान, अंग्रेजी और स्थानीय कनेक्शन का दुरुपयोग करता हैं। इन सभी के लिए आरडब्ल्यूए के धन में बड़े पैमाने पर हेराफेरी की जा रही है।

देखी-सुनी

खबरीलाल

नीरज शर्मा आखिर चाहते क्या हैं

कांग्रेस विधायक नीरज शर्मा इन दिनों पत्रकारों के स्टिंग में हिस्सा लेने लगे हैं। ऐसी दूसरी घटना सामने आई है। फेसबुक लाइव स्टिंग में दिखाया गया कि वॉर्ड 6 के बूस्टर पंप पर बने निगम दफ्तर में पार्षद सुरेंद्र अग्रवाल और नगर निगम फ़रीदाबाद का एक जेई राहुल तेवतिया सहित कुछ लोग बैठकर शराब पी रहे थे और मीट-मुर्ग़ा खा रहे थे। लाइव के दौरान वहाँ कांग्रेस विधायक नीरज शर्मा आ गए और उन्होंने नगर निगम के उस कमरे पर ताला लगा दिया और इलाक़े की पुलिस को कॉल किया। तब तक वो लोग भाग निकले। अगले दिन विधायक ने निगम कमिश्नर गरिमा मित्तल को पत्र लिखकर इस मामले में कार्रवाई की माँग की। अब तक हुआ कुछ नहीं है। लेकिन पुलिस और पार्षद की हरकत देखिए। पार्षद अग्रवाल ने उल्टा विधायक नीरज शर्मा पर आरोप लगा दिया कि उन्होंने शराब पी रखी थी। पुलिस ने जब उनका मेडिकल कराना चाहा तो वो भाग खड़े हुए। पुलिस वालों ने भी कह दिया कि हम तो दोनों पक्षों का मेडिकल कराना चाहते थे लेकिन नीरज शर्मा तैयार नहीं हुए और चले गए।

दारूबाजी फ़ेसबुक लाइव करने वाला वही पत्रकार और विधायक नीरज शर्मा उस स्टिंग में भी नज़र आए थे जब ऑक्सिजन की कालाबाज़ारी फ़रीदाबाद में चरम पर थी और लोग मर रहे थे। सेक्टर 31 में एक गोदाम से कालाबाज़ारी का धंधा चल रहा था। उस स्टिंग में भी वो पत्रकार और नीरज शर्मा ख़ूब चीखें चिल्लाए, पुलिस बुला ली। लेकिन उस केस में भी हुआ कुछ नहीं। पुलिस ने भेद खोला कि दोनों में से किसी ने गोदाम वाले के ख़िलाफ़ लिखित शिकायत दी ही नहीं थी। इस केस में भी यही हो रहा है। दोनों ने वहाँ हुई दारूबाज़ी की लिखित शिकायत पुलिस से नहीं की। पुलिस फ़ेसबुक लाइव के आधार पर केस नहीं दर्ज करती। बहरहाल, इस बार नीरज और उनके पत्रकार मित्र फंस गए हैं, उन लोगों पर तमाम तरह के आरोप लग रहे हैं। आख़िर विधायक नीरज शर्मा चाहते क्या हैं? इस मामले में वो पार्षद सुरेंद्र अग्रवाल का तो कुछ उखाड़ नहीं पाएँगे, राहुल तेवतिया को ज़्यादा से ज़्यादा सस्पेंड कर दिया जाएगा। नीरज को चाहिए कि उनके इलाक़े का पानी बेचने वाले नेताओं का स्टिंग अपने पत्रकार मित्र से कराएँ।

अनीता शर्मा और ब्राह्मण संगठन को लपेटा ब्राह्मण ने

एक मित्र ने ब्राह्मणवाद के नाम पर फैलाए गए वाट्सऐप मैसेज को पढ़ाया जो बड़ा ही दिलचस्प है। इससे पता चलता है कि भ्रष्ट किस्म के अधिकारी अपने नाम और जाति को भुनाने में कोई मौका नहीं छोड़ते। फरीदाबाद में अनीता शर्मा शिक्षा विभाग में थीं और बहुत सारे विवाद और तरह-तरह की चर्चा के केंद्र में रही थीं। हाल ही में वह जब रिटायर होने वाली थीं तो उन्हें दो दिन के लिए कैथल में जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी बना दिया गया। दो दिन बाद वो रिटायर हो गईं। ब्राह्मणों के वाट्सऐप ग्रुप में मैसेज चला कि - अनीता रानी बनी जिला शिक्षा अधिकारी, देर से मिली प्रमोशन से ब्राह्मण संगठनों में नाराजगी। इस पर उसी ब्राह्मण ग्रुप में एक ब्राह्मण शिक्षक ने चुटकी ली। उस शिक्षक ने अनीता शर्मा के सारे पाप गिना डाले- मैसेज पढ़कर हैरानी हुई और लगा की अब घोर कलयुग आ चुका है। इन्हें एमकॉम में 48 प्रतिशत मार्क्स होने के बावजूद फर्जी तरीके से नौकरी मिली थी। 1995 में बर्खास्त होने के बाद भी सांठगांठ से विभाग में बनी रहीं। डिप्टी डीईओ रहने के दौरान कई ब्राह्मण अध्यापक-अध्यापिकाओं को धमकाकर वसूली करती रही। ऑफिस से सरकारी सामान घर ले जाने, विभाग द्वारा गलत तरीके से किए भुगतान पर 18000 लगभग की रिकवरी सरकार ने इनसे की। गलत बातों को न मानने पर ब्राह्मण शिक्षकों का मानसिक,आर्थिक शोषण करने वाली तथाकथित अधिकारी महोदया द्वारा पिछले वर्ष एक ब्राह्मण, फौजी, ईमानदार अध्यापक को केवल शिक्षकों की ट्रेनिंग के दौरान खाने को नियमानुसार देने के कहने पर षडयंत्र के तहत फंसा कर निलंबित कर दिया गया था। तब ब्राह्मण संगठनों को नाराजगी नहीं हुई। गलत को गलत कहो, सही को सही तभी संगठन चलता है। ये ब्राह्मण संगठन भी एक षडयंत्र जान पड़ता है। समाज में राजनीति वैसे ही हर जगह है शिक्षा को प्लीज मत लपेटो।

इंदिरा गांधी को कोसा, मगर होटल में बैठ कर

भाजपाई गुटबाजी का जिक्र मीडिया में सबसे कम होता है। हरियाणा में मनोहर लाल खट्टर बनाम राम विलास शर्मा गुट की सूचनाएं मीडिया को मिलती ही नहीं हैं। इस साल 25 जून को भाजपा आलाकमान ने पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को कोसने का दिन चुना था। निर्देश दिया गया था कि हर शहर में कार्यक्रम आयोजित कर 25 जून 1975 को लगाए गए आपातकाल के दौर को याद करते हुए इंदिरा गांधी को कटघरे में खड़ा किया जाए। फरीदाबाद भाजपा के अध्यक्ष गोपाल शर्मा ने इस कार्यक्रम में हरियाणा भाजपा के पूर्व अध्यक्ष और कभी सीएम पद के दावेदार रहे राम विलास शर्मा को बुलाया। जिला भाजपा ने यह कार्यक्रम अपने पार्टी कार्यालय पर करने की बजाय मिलन वाटिका नामक एक होटल में आयोजित किया। इस बैठक में भाजपा के ब्राह्मण लॉबी के नेता और विधायक पहुंचे। कार्यकर्ता और जनता के नाम पर महज 50 लोग थे। हालांकि राम विलास पार्टी के पुराने नेता हैं लेकिन उनके बाद नेता और मंत्री बने लोग उनकी परवाह नहीं करते हैं। राम विलास इससे पहले जब फरीदाबाद आते थे तो पार्टी के सारे बड़े-छोटे नेता उनके आगे घूमते थे। लेकिन जिन नेताओं को दलाली से फुरसत ही नहीं है, वे राम विलास के कार्यक्रम में क्या पहुंचते।

आईएएस अफसर हैं या चमचे

बात यूपी की है। आपने अक्सर मीडिया में वो तस्वीरें देखी होंगी, जिसमें यूपी का मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कभी किसी गाय को सहला रहा है, कभी किसी बछड़े को चारा खिला रहा है। योगी के गोरखनाथ मंदिर में गोशाला है तो वो जब भी वहां जाता है, इस तरह की तस्वीरें सामने आती हैं। इससे पहले इसी योगी की तस्वीर बंदर के साथ आती थी। यहां तक कि जब वो सांसद बन गया, तब भी बंदर के साथ फोटो आती रही। पशु प्रेम बहुत अच्छी बात है लेकिन जब आईएएस अफसर मुख्यमंत्री को खुश करने के लिए अपनी फोटो कभी गाय या कभी बछड़े के साथ डालने लगें तो यह चमचागीरी का निम्नस्तरीय लेवल कहा जाएगा। सोशल मीडिया पर गुरुवार को बुलंदशहर के डीएम रवीन्द्र कुमार की फोटो बछड़े के साथ सोशल मीडिया पर नजर आई। इससे पहले भी यूपी के कई आईएएस-आईपीएस सीएम योगी को खुश करने के लिए ऐसी फोटो डालते रहे हैं लेकिन इधर चलन बढ़ता ही जा रहा है। बताते हैं कि एक जिले में एक डीएम ने योगी को खुश करने के लिए अपने सरकारी आवास में पाली गई गाय को दिखाना चाहा तो योगी ने उस डीएम को डांट दिया। बताते हैं कि योगी ने उस अफसर से कहा कि आपका जो काम है, वही करो। ...इस घटना के बावजूद यूपी के अफसर चमचागीरी से पीछे नहीं हट रहे हैं। बहरहाल, उस फोटो को लाइक करने में हरियाणा कैडर की आईएएस सोनल गोयल ने देर नहीं लगाई। हालांकि सोनल गोयल अपनी ज्यादातर फोटो एक्सरसाइज करते हुए शेयर करती हैं। मैं यूपी के ऐसे कई आईएएस अफसरों को जानता हूं जो अपने सरकारी आवास में शुद्ध दूध के लिए गाय-भैंस पालते रहे हैं लेकिन उन्होंने कभी उनके साथ फोटो खिंचवाकर भोंडा प्रदर्शन नहीं किया।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06